Dr Vinod Baitha
Marwari college Darbhanga

Q– मुद्रा से आप क्या समझते हैं? इसके मुख्य कार्यों का वर्णन करें।
Whate do you mean by money? Discuss its main functions।

आधुनिक जीवन में मुद्रा के बिना कोई कार्य सम्पादन नहीं किया जा सकता है, मुद्रा का महत्व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में है, आज मुद्रा हमारे जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग बन गई है। सामाजिक आर्थिक क्रियाओं का सम्पादन मुद्रा के बिना संभव नहीं है। अर्थ-व्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में मुद्रा अहम भूमिका अदा करती है। इस संदर्भ प्रो० मार्शल ने कहा है "मुद्रा वह धुरी है जिसके चारों ओर अर्थशास्त्र चक्कर काटता है।" Money is a Pivot around Which economic science clusters. प्रो० पीगु Pigu ने मुद्रा को वैसा ही तेल माना है जो आर्थिक मशीन को आसानी से संचालित करता है। अर्थशास्त्री हार्टले विदर्स Hartley Withers के अनुसार "मुद्रा वही है जो मुद्रा का कार्य करती है।" Money is What money does. नैप Knapp के अनुसार "मुद्रा की सृष्टि राजकीय नियमों द्वारा की जाती है।" Money is created by the Imprimatur of Law. उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मुद्रा एक ऐसी वस्तु है जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक, ऋणों के भुगतान के साधन एवं मूल्य संचय के साधन के रूप में निःसंकोच सामान्य रूप से स्वीकार की जाती है।

प्रो० किनले (Kinley) ने मुद्रा के कार्यों को तीन भागों में विभाजित किया है, जो निम्नलिखित है।

1. मुख्य कार्य Primary function.
2. सहायक या गौण कार्य Secondary function.
3. आकस्मिक कार्य — contingent function.

1. मुख्य कार्य — मुख्य कार्य को दो भागों में बाटा गया है।

A. विनिमय का माध्यम — मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य

Scanned by CamScanner

करती है। यह मुद्रा का केन्द्रिय कार्य है। इस कार्य के सम्पादन में मुद्रा की सामान्य स्वीकृति की धारणा स्पष्ट रूप से हमारे सामने आती है। मुद्रा वस्तुओं के लेन-देन तथा विनिमय में हमारी सहायता करती है। मुद्रा के माध्यम से ही विनिमय कार्य सम्पन्न होता है। वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाईयों को मुद्रा ने ही दूर किया है। मुद्रा को लोग बेझिझक स्वीकार करते हैं।

B. मूल्य का मापक — Measure of Value — आज मुद्रा सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य का सामान्य मापक का कार्य करती है। मुद्रा का यह दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। मुद्रा के द्वारा भिन्न-भिन्न वस्तुओं के सापेक्षिक मूल्य की माप की जा सकती है। यह एक सामान्य मापदण्ड है। जिसके द्वारा मूल्य को मापा जाता है। मुद्रा के आविष्कार से विभिन्न वस्तुओं के मूल्य मापन या अनुपात के निर्धारण का कार्य आसान बन गया है। वस्तुओं के मूल्य को मापने की इकाई के रूप में मुद्रा का प्रयोग होता है। मुद्रा प्रमाणिक मूल्य मापक का कार्य करती है।

2. गौण या द्वितीयक कार्य — Secondary functions — मुद्रा के गौण या द्वितीयक कार्यों में तीन कार्य आवश्यक माने जाते हैं।

A. मूल्य का संचय — Store of Value — मुद्रा मूल्य संचय का कार्य करती है। मुद्रा के रूप में बहुत बड़ी धन संग्रह किया जा सकता है। वस्तुओं के रूप में यह कार्य बहुत कठिन था। मुद्रा के रूप में आसानी से तथा सुरक्षापूर्वक मूल्य या धन का संचय किया जा सकता है। मुद्रा के रूप में धन एक वर्ष से दूसरे वर्ष में आसानी संचित किया जा सकता है। इस प्रकार मुद्रा वर्तमान से भविष्य के बीच पुल का कार्य करती है। मुद्रा के रूप में मूल्य या धन का स्थापित्व के साथ संचय संभव है। मुद्रा ऐसी युक्ति है जो वर्तमान को भविष्य से जोड़ती है।

B. विलंबित भुगतान का मान दण्ड या मानक - Standard of deferred payments — आज मुद्रा द्वारा लिए गए ऋण या उधार के भुगतान के मापदण्ड का कार्य करती है। आज विलम्बित भुगतान मुद्रा के माध्यम से आसान हो गया है। वस्तु विनिमय प्रणाली में यह कार्य कठिन था। ऋण की राशि का भविष्य में कैसे तथा कितना भुगतान किया जाय इसका निर्धारण कठिन था। लेकिन आज मुद्रा के माध्यम से बड़े पैमाने पर ऋण के भुगतान एवं उधार कार्य सम्पन्न किया जाता है। मुद्रा के आविष्कार ने व्यवसाय एवं व्यापार के कार्यों को प्रोत्साहित किया है।

Scanned by CamScanner

आज मुद्रा विलंबित भुगतान के मानक के रूप में सफलता पूर्वक कार्य करती है क्योंकि इसका मूल्य स्थिर होता है। तथा सर्वग्राह्यता का गुण भी विद्यमान है।

C. मूल्य का हस्तांतरण - Transfer of Value — आज मुद्रा के द्वारा मूल्य का हस्तांतरण सुगम हो गया है। एक स्थान से दूसरे स्थान या एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच मूल्य या धन का हस्तांतरण आसानी से किया जा सकता है। वस्तु-विनिमय प्रणाली में यह कार्य कठिन था। किसी वस्तु, सामान चल या अचल सम्पत्ति को बेचकर उसके बदले कहीं दूसरे स्थान पर उसी तरह की वस्तु या सम्पत्ति आसानी से खरीदी जा सकती है। आज मूल्य या संपत्ति का हस्तांतरण काफी सरल और आसान हो गया है मुद्रा के प्रयोग से इसमें गतिशीलता आई है।

3. आकस्मिक कार्य - Contingent functions प्रो० किनले Pro Kinley के अनुसार मुद्रा के चार आकस्मिक कार्य है जो निम्नलिखित है।

A. राष्ट्रीय आय का वितरण - Distribution of national income उत्पादन की क्रिया विभिन्न साधनों के सम्मिलित प्रयास एवं सहयोग द्वारा सम्पन्न होती है। इसके सहयोग से राष्ट्रीय आय का उत्पादन होता है। पुनः श्रमि-श्रम, पूंजी एवं साहसी के बीच राष्ट्रीय आय का वितरण उनके पारितोषिक के रूप में मुद्रा के सहारे किया जाता है। मुद्रा के रूप में ही विभिन्न उत्पादन साधनों का पारितोषिक निर्धारित होता है। इस तरह मुद्रा सामाजिक आय एवं राष्ट्रीय आय के वितरण में सहायक होती है।

B. सीमांत उपयोगिता तथा सीमान्त उत्पादकता में समानता लाना — उपभोक्ता का उद्देश्य अपनी सीमित आय द्वारा अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना होता है। वह अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार खर्च करते हैं कि उसे विभिन्न वस्तुओं पर कीए गए अंतिम इकाई के व्यय से अपना संतुष्टि प्राप्त हो सके। इसका माध्यम मुद्रा ही है।

C. साख का आधार — Basis of credit — आज उधार पर आधारित कार्यों में वृद्धि हुई है। व्यवसायिक बैंक जो उधार या साख का निर्माण करते हैं वह प्राथमिक जमा पर आधारित होता है। यह कार्य मुद्रा द्वारा ही किया जाता है।

D. पूंजी या धन को सामान्य रूप प्रदान करना - Providing General form to capital — मुद्रा ने धन एवं पूंजी को सामान्य रूप प्रदान किया है। जिसमें मुद्रा सबसे तरल साधन मानी जाती है इसे जिस रूप में चाहें बदला जा सकता है। मुद्रा के कारण ही पूंजी में तरलता एवं गतिशीलता आई है।

Scanned by CamScanner

4. मुद्रा का अन्य कार्य :- मुद्रा के उपर्युक्त कार्यों के अलावे अन्य कार्य भी है जो निम्नलिखित है

A शोधन-क्षमता की गारंटी - मुद्रा द्वारा कोई भी व्यक्ति या फर्म ऋण भुगतान की स्थिति में होता है या शोधन क्षमता प्राप्त करता है। शोधन क्षमता के लिए मुद्रा रखना आवश्यक होता है। मुद्रा शोधन क्षमता की गारंटी का कार्य करती है।

B. तरल सम्पत्ति के रूप में - मुद्रा सबसे तरल साधन है इससे जिस रूप में चाहे प्रयोग में लाया जा सकता है। अन्य सम्पत्ति में यह गुण नहीं होता है। मुद्रा में तरलता का गुण विद्यमान है।

C. निर्णय का वाहक - मुद्रा के रूप में सम्पत्ति का संचय किया जा सकता है इस संचित मुद्रा का प्रयोग हम भविष्य में अपनी इच्छानुसार एवं निर्णय के अनुसार कर सकते हैं। मुद्रा व्यक्ति के निर्णय के वाहक का कार्य करती है।

इस तरह मुद्रा हमारे जीवन से जुड़ी अनेक महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन करती है मुद्रा के कार्यों में प्रायोगिकता या गतिशीलता रही है।

Scanned by CamScanner